मैं आप सब लोगों को गणतंत्र दिवस की 62वीं वर्षगांठ की पावन वेला पर हार्दिक वधाई देता हूँ। आज से 6 दशक पूर्व 26 जनवरी 1950 को हमारा देश एक गणराज्य के रूप में असतित्व में आया और इसी दिन हमे न्याय, स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के सिद्धान्तों से निर्देशित किया गया। अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों का पालन करते हुये हमने 6 दशक के इस सफर में कई मुकाम हासिल किये है लेकिन अभी भी हमें विकास की कई और मंजिलो को छूना है जिन तक पहुंचने के लिये हमे अपनी उपलब्धियों और संकल्प की भावना के साथ–साथ अपनी कमियों को दूर करते एक जुट होना पड़ेगा।

इस संस्थान का कार्य क्षेत्र देश के लुग्दी एवं कागज उद्योग की समस्याओं को सुलझाने और उन्हें तकनीकी सहायता उपलब्ध कराना है ताकि वे वैश्विक प्रतिस्पर्धा के समकक्ष हो सकें। इसीलिये संस्थान 11वीं पंचवर्षीय योजनाओं में कागज उद्योग की मुख्य समस्याओं पर आधारित परियोजनाओं पर कार्य किया।

संस्थान कागज एवं लुग्दी उद्योग को अपनी विशिष्ट सेवायें देने के लिये लगातार प्रयत्नशील है। संस्थान को बहुत से सरकारी विभागों व अभिकरणों द्वारा विभिन्न परीक्षण नमूनों के मूल्यांकन/परीक्षण, जिसमें कच्चा माल, रसायन, कागज और पर्यावरण के लिए, मान्यता प्रदान की गई है।

विगत कई वर्षो से संस्थान ने ऊर्जा प्रबन्धन के क्षेत्र में सार्थक भूमिका निभाई है और वर्ष के दौरान संस्थान ने लगातार 'ऊर्जा कार्यकुशलता ब्यूरो' को लुग्दी एवं कागज उद्योग में ऊर्जा खपत के दिशा–निर्देश के क्रियान्वयन के लिए लुग्दी एवं कागज मिलों के आंकड़े इकट्ठे करने में सहायता उपलब्ध कराई।

पर्यावरण सुरक्षा के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता दुहराई है और संस्थान को कई योजना/प्रायोजित परियोजनायें मिली हैं। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने पर्यावरण सुरक्षा से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण परियोजनायें सी.पी.पी.आर.आई को दी है। संस्थान लुग्दी एवं कागज उद्योग में जैव–प्रौद्यागिकी के अनुप्रयोग को प्रमुखता दे रहा है और हाल ही में निस्त्राव शोधन के लिये एक संयत्र के आधार पर अध्ययन कर रहा है।

हमारे देश में अभी तक रद्‌दी कागज को एकत्रित करने उसकी ग्रेडिगं व वितरण हेतु कोई संगठित, अनुपातिक व वैज्ञानिक विधि नहीं है। अतः संस्थान उपकर से पोषित इस परियोजना पर कार्य कर रहा है जिसके तहत सर्वप्रथम दिल्ली तथा उसके आस पास के क्षेत्र के विभिन्न तरह के रद्‌दी कागज की उपलब्धता तथा व्यापारिक आंकड़े एकत्रित करना है। संस्थान न्यूजप्रिंट मिलों द्वारा deinking के लिये प्रयोग में लाये जा रहे बहुत से रसायनो के उचित उपयोग के विषय में भी अनुसंधान कर रहा है। Paper Recycling के क्षेत्र में विभिन्न मिलों को तकनीकी एवं परामर्शी सेवायें दी गई हैं। संस्थान पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार को रद्‌दी कागज के आयात के नीति निर्धारण में भी सहायता प्रदान कर रहा है।

वर्ष के दौरान संस्थान ने लुग्दी एवं कागज मिलों के कर्मियों के ज्ञान और व्यवसाइक कौशल के उन्नयन हेतु कई कार्यशालायें/गोष्ठियां आयोजित की। संस्थान लुग्दी एवं कागज प्रौद्यागिकी के क्षेत्र में अन्य संस्थानो के साथ मिलकर बहुत से परीक्षण कार्यक्रमों को संचालन के लिये भी योजना बना रहा है।

सी.पी.पी.आर.आई ने हाल ही में मलेशिया के एक संस्थान की **Bleaching of Pineapple Waste Pulp** की परियोजना को सम्पन्न किया।

संस्थान ने मानव संसाधन विकास एवं संयुक्त अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों में आपसी सहयोग के लिये ''कृषि एवं प्राकृतिक संसाधन विश्वविद्यालय गोरगन, ईरान के साथ अनुबन्ध पर हस्ताक्षर किये हैं।

संस्थान कागज उद्योग के विकास एवं अनुसंधान से सम्बन्धित कई परियोजनाएं 12वी पंचवर्षीय योजना के लिए तैयार कर चुका है। इन परियोजनाओं को एक तटस्थ संस्था से मूल्याकन कराकर उद्योग एवं वाणिज्य मंत्रालय के द्वारा योजना आयोग को संस्तुति के लिए भेज चुका है ताकि 12वीं पंचवर्षीय योजना में स्वीकृत परियोजनाएं संस्थान में समय से आरम्भ हो सकें। संस्थान एक उच्च प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना के लिए भी प्रयासरत है ताकि भारतीय कागज उद्योग को तकनीकी रूप से कुशल मानवशक्ति उपलब्ध हो सके।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को आफिस के दैनिक कार्यों में उपयोग हेतु बढ़ावा दिया जा रहा है। सभी कर्मियों को अपने दिन–प्रतिदिन के कार्य हिन्दी भाषा में प्रतिपादित करने हेतु प्रोत्साहित किया